

राग-द्वेष अभिमान पाप हर काम क्रोध को चूर करूँ।
 जो संकल्प-विकल्प उठे प्रभु उनको क्षण-क्षण दूर करूँ॥
 अणु भर भी यदि राग रहेगा नहीं मोक्ष पद पाऊँगा।
 तीन लोक में काल अनंता राग लिये भरमाऊँगा॥
 राग शुभाशुभ के विनाश से वीतराग बन जाऊँगा।
 शुद्धात्मानुभूति के द्वारा स्वयं सिद्ध पद पाऊँगा॥
 पर्यूषण में दूषण त्यागूँ बाह्य क्रिया में रमे न मन।
 शिव पथ का अनुसरण करूँ मैं बन के नाथ सिद्ध नन्दन॥
 जीव मात्र पर क्षमा भाव रख मैं व्यवहार धर्म पालूँ।
 निज शुद्धात्म पर करुणा कर निश्चय धर्म सहज पालूँ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

मोक्ष-मार्ग दर्शा रहा, क्षमावाणी का पर्व।
 क्षमाभाव धारण करो, राग-द्वेष हर सर्व॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

भजन

वन्दों अद्भुत चन्द्रवीर जिन, भविचकोर चित हारी।
 चिदानन्द अंबुधि अब उच्छ्रयो भव तप नाशन हारी॥टेक॥
 सिद्धारथ नृप कुल नभ मण्डल, खण्डन भ्रम-तम भारी।
 परमानन्द जलधि विस्तारन, पाप ताप छय कारी॥१॥
 उदित निरन्तर त्रिभुवन अन्तर, कीरत किन्नर पसारी।
 दोष मलंक कलंक अखकि, मोह राहु निरवारी॥२॥
 कर्मावरण पयोध अरोधित, बोधित शिव मगचारी।
 गणधरादि मुनि उड्डान सेवत, नित पूनम तिथि धारी॥३॥
 अखिल अलोकाकाश उलंघन, जासु ज्ञान उजयारी।
 'दौलत' तनसा कुमुदिनिमोदन, ज्यों चरम जगतारी॥४॥